e-ISSN No. 3107/6564

भाग 01 अंक 01 / जून 2025

e-ISSN No. 3107/6564

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)

Contact to us - E-mail: editorinchief@naso.org.in / website: www.naso.org.in

e-ISSN No. 3107/6564

डॉ. भाष्कर दुबे
मुख्य संपादक
ediotorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग, SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक –

डॉ. भाष्कर दुबे

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका

पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) 230124

कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007

Website – www.naso.org.in

E-mail – editorinchief@naso.org.in

Contact – 9936902749 / 7068708058

e-ISSN No. 3107/6564

प्राकृतिक खेती

डॉ शाह आलम
ausahalam22@gmail.com
सहायक प्रोफेसर - बीजीआई, मेजा, प्रयागराज
(प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज

परिचय:

प्राकृतिक खेती (Natural Farming) एक ऐसी कृषि पद्धति है जिसमें **रासायनिक खादों, कीटनाशकों और मशीनों का उपयोग नहीं किया जाता**, बल्कि पूरी तरह से **प्राकृतिक संसाधनों** जैसे गोबर, गोमूत्र, जीवामृत, और मल्चिंग आदि पर आधारित खेती की जाती है। इस पद्धति को **"शून्य लागत प्राकृतिक खेती" (Zero Budget Natural Farming – ZBNF)** के रूप में भी जाना जाता है, जिसके प्रचारक **सुभाष पालेकर** जी हैं।

प्राकृतिक खेती के मुख्य तत्व:

- **बीज उपचार (Beejamrit):**
  गोमूत्र, गोबर, चूना और पानी से बीजों का उपचार कर उन्हें रोग-प्रतिरोधक बनाया जाता है।
- **मिट्टी उपचार (Jeevamrit):**
  देशी गाय के गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन और मिट्टी से तैयार घोल को मिट्टी में मिलाकर जीवाणु सक्रिय किए जाते हैं।
- **मल्चिंग (Mulching):**
  मिट्टी को सूखने से रोकने के लिए उसके ऊपर पत्तों, घास या फसल अवशेषों की परत बिछाई जाती है।
- **वापसा (Wapsa):**
  मिट्टी में आवश्यक नमी बनाए रखने की तकनीक, जिससे पानी की बचत होती है।
- **कीट नियंत्रण (Natural Pest Control):**
  नीम का तेल, दशपर्णी अर्क, छाछ आदि से कीटों को नियंत्रित किया जाता है।

प्राकृतिक खेती के लाभ:

लाभ	विवरण
1. **स्वस्थ फसलें**	रसायन मुक्त उत्पादन से पोषण और स्वाद बढ़ता है।
2. **मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है**	जैविक तत्वों के प्रयोग से मृदा की गुणवत्ता सुधरती है।
3. **जल की बचत**	सिंचाई की आवश्यकता कम होती है।
4. **कम लागत**	उर्वरक और कीटनाशकों की खरीद की आवश्यकता नहीं होती।
5. **पर्यावरण संरक्षण**	मृदा, जल और वायु सभी संरक्षित रहते हैं।

प्राकृतिक खेती की चुनौतियाँ:

पहले साल में उत्पादन थोड़ा कम हो सकता है।
जैविक तकनीकों की समझ और प्रशिक्षण आवश्यक होता है।
बाजार में जैविक उत्पादों के लिए विश्वसनीय पहचान प्रणाली की कमी।

प्राकृतिक खेती के लिए सुझाव:

1) स्थानीय स्तर पर **देशी गायों का गोबर और गोमूत्र** एकत्र करें।
2) **जैविक प्रशिक्षण शिविरों** में भाग लें (जैसे कृषि विज्ञान केंद्र, ZBNF शिविर)।
3) **पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान** का संयोजन करें।
4) किसान **समूह या सहकारी समिति** बनाकर जैविक उत्पादों का विपणन करें।

निष्कर्ष:

प्राकृतिक खेती **प्रकृति के अनुरूप जीवन** और **टिकाऊ कृषि** का मार्ग है। यह न केवल किसानों की आय बढ़ा सकती है बल्कि **मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण और जलवायु संरक्षण** में भी सहायक है। यदि नीति निर्माताओं और किसानों का सहयोग मिले, तो यह भारत को फिर से **"हरित भारत"** बना सकती है।